Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer-Peer Reviewed, Refereed & Open Access International Journal - As per UGC Norms
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:6(1), June 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

जप जी साहब के मूल मंत्र में उद्‌धृत संस्कृत शब्दों की व्युत्पत्ति परक व्याख्या एवं दार्शनिक विवेचन

भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद प्रदत्त वरिष्ठ अध्येता वृत्ति के अन्तर्गत प्रकाशित

डॉ राजेन्द्र मलिक
वरिष्ठ अध्येता
पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

गुरु ग्रंथ साहिब का का प्रारंभ जपजी साहिब से होता है। आचार्य विश्व बंधु ने साहब को संहिता का नाम दिया है। जप शब्द 'जप' धातु लोट् लकार , मध्यम पुरुष, एकवचन का है, जिसका शाब्दिक अर्थ है—जपना, जाप करो। मंत्र दो प्रकार का होता है-- 1गुरु मंत्र ,2माला मंत्र। दीक्षा दीयते ज्ञान सद्भावम्[1] के समय जो मंत्र का उपदेश शिष्य के दाएं कान में तीन बार किया जाता है उसको गुरु मंत्र और जिस मंत्र का उच्चारण सहज स्वभाव से किया जाता है माला अथवा बिना माला के उसको माला मंत्र कहा जाता है। गुरु संप्रदाय में एक ओंकार सतनाम से लेकर नानक होसीभी सच तक जितना भी मंत्र है उसका नाम गुरु मंत्र और वाहेगुरु वह मंत्र का माला मंत्र नाम है ।ओम शब्द की व्याख्या वत वाहेगुरु की भी विस्तृत व्याख्या विद्वानों द्वारा की गई है ।[2]

एक ----- एक ईश्वर अखंड सच्चिदानंद रूप है केवल वही सत्य है अन्य सब असत हैं एक शब्द के स्थान पर एक अंक का प्रयोग किया गया है 1 अंक दस, हजार, लाख , करोड़ इत्यादि भेदों से अनेक रूप होता है उन सब अनेकों की सत्ता इस एक से ही है वाचस्पत्यम कामधेनु तंत्र को उद्‌धृत करते हुए कहता है ,'एकारमं,परमं दिव्यं,

ब्रह्म विष्णु शिवात्मकं।[3]''एकंएव अद्वितीयंब्रह्म ।तत्र को मोहःको शोकः एकत्वमनुपश्यतः।''

ओंकार ----ओम्+कार। ओंकार स्वाहा कार और वषट्कार की भांति ही ओंकार बनता है ओंकार का अर्थ---- ईश्वर। ओंकार को प्रणव भी कहा गया है। पतंजलि के अनुसार प्रणव का अर्थ ईश्वर है।

तस्य वाचकः प्रणवः।[4]

प्रश्नोपनिषद् में भी कहा गया है

एतद् वै सत्यकाम।परं च अपरं च ब्रह्म,यद् ओंकार ।[5]

तस्य वाचकः प्रणवः ---वाच्यः ईश्वरः। ओंकारस्य माहात्म्यं स्वरूपादिकं ब्राह्मणसंदर्शितं।[6]

---

111 तन्त्रालोक,13—
2 - श्री पृष्ठ 34
स्वामी केशवानंद जी ने अपनी गुरु गीता के चतुर्थ अध्याय में वाहगुरु मन्त्र के सम्बन्ध में दो श्लोक लिखे हैं
वाहगुरुरयं मन्त्रो भाव बन्ध विमोचकः
मंत्राःसर्वे अस्य मंत्रस्य नार्हतिषोडशी कलाम्।
सकृदुच्चारितो येन मन्त्रराजोअयमद्‌भुतः
कलौ पाप सहस्त्राणां तस्य स्याद् विनीवर्तनम्।
3 द्वितीयो भाग पृष्ठ 366
4 4---योगसूत्र 1.27
5 प्रश्नोपनिषद्5---.2
6 वाचस्पत्यम्। भाग 2-पृष्ठ,391

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer-Peer Reviewed, Refereed & Open Access International Journal - As per UGC Norms
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:6(1), June 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

यह समस्त जगत ओंकार द्वारा धारण किया जाता है। जगदिदं सर्वमोंकारेणैव धार्यते।[7]

मनुस्मृति कहती है

अकारचाप्युकारं च मकारं च प्रजापतिः।

वेदत्रयाननिरदुहत्त् भूर्भुवः स्वरितीति च।[8]

गीता के अनुसार

ओम् तत्सदिति ।[9]

सतनाम ----जो ईश्वरीय सत्ता सर्वदा एक रस है ,अविनाशी है ,वही सत्ता ही सत्य कही जाती है। ऋग्वेद कहता है ‘‘एकम् सद् विप्रा बहुधा वदंति , अग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः।’ [10] ’ छान्दोग्य उपनिषद में भी ईश्वर का नाम सत्य है ‘‘सद् एव सौम्य ।एदमग्रे आसीत् एकमेवाद्वितीयम्।’’[11]श्रीमद् भगवत गीता कहती है ,’’नासतो विद्यतेभावो ,नाभावो विद्यते सतः।’’[12] गुरु ग्रंथ साहिब में श्री अर्जुन देव जी ने भी सतनाम को ही ईश्वर का मुख्य नाम कहा है।

ਕਿਰਤਮ ਨਾਮ ਕਥੀਤੇਰੇ ਜਿਭਾ

ਸਤ ਨਾਮ ਤੇਰਾਪਰਾ ਪੁਰਵਲਾ।[13]

विवेकी मनुष्य सत ईश्वर को देखता है। वह ईश्वर सत रूप होकर सभी चराचरपदार्थों में ओतप्रोत है।

‘‘वनस्तत् पश्यन् निहितं गुहा सद् यत्र विश्वं भवति एक नीडं।

तस्मिन् इदं सं च वि च एति, सर्वं स ओतश्च प्रोतश्च विभुःप्रजासु[14]

करता -कर्ता सृष्टि कर्ता,पालन कर्ता ,और संहार कर्ता के रूप में ,ईश्वर को कहा गया है इस चराचर जगत की उत्पत्ति, स्थिति एवं लय ईश्वर से ही है। तैतिरीयोपनिषद् में कहां गया है , ‘‘यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते,येन जातानि जीवन्ति ,यत् प्रयान्ति,अभिसंविशन्ति,तद् विजिज्ञासस्व,तद् ब्रह्म।’’[15]

बादरायण मुनि ने इसी आधार पर’ ब्रह्म सूत्र ‘में कहा, ‘‘जन्मादि अस्य यतः।’’[16]

---

[7] ------------वही
[8] 2,15
[9] ----------श्रीमद्भगवदगीता के प्रत्येक अध्याय का अन्त
[10] -------ऋग्वेद, 1,164,46
[11] छान्दोग्य,6,2,1
[12] गीता,2
[13] -----------मारु राग,20
[14] -----------यजुर्वेद,32,8
[15] तैतिरीयोपनिषद् 3,1
[16] ब्रह्म सूत्र 1,1,2

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer-Peer Reviewed, Refereed & Open Access International Journal - As per UGC Norms
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:6(1), June 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

इसीलिए ईश्वर सर्वज्ञ है ,सर्वशक्तिमान है । ''जन्माद्यस्य यतः'' के भाष्य में आचार्य शंकर लिखते हैं' ''अस्य जगतो जन्म स्थिति भंगं यतः सर्व ज्ञात् सर्वशक्तेःकारणाद् भवति तद् ब्रह्म।[17]

पुरख----------- पुरुष समस्त ब्रह्माण्ड में ईश्वर पूर्ण है। पुरुष , '' पुरिषादः पुरिशयः पूरयतेर्वा,पूरयति अन्तर इति अन्तर पुरुषमभिप्रेत्य।''

यास्क मुनि ने कृष्ण यजुर्वेद का यह मन्त्र उद्धृत किया है

''यस्मात् परं नापरमस्ति किंचित्, यस्मात् नाणीयो न ज्यायो कश्चित्।[18]''

निर्भौ ------- (निर्भय) निर्+भौ

भौ का अर्थ भय है। जैसे स्तेन का उच्चारण स्तौन [19]है, वैसे यहां भय का उच्चारण भौ हो सकता है।

श्री गुरु नानक देव जी ने गुरु मन्त्र में प्रान्तिक भाषा के भौ शब्द का उच्चारण किया है।आदि काल से प्रान्तिक भाषा के शब्द साहित्य में प्रयोग किए जाते रहे हैं। उदाहरणार्थ

नीची निवारं।[20] द्वारं के स्थान पर वारं। उल्लेखनीय है कि वार शब्द लाट भाषा का है।

नापि द्वार शब्दस्य स्थाने लाट भाषातोअन्यत्र वार शब्दःसम्भवति।[21]

ईश्वर सृष्टि कर्ता है । ईश्वर भय से रहित है, उसके समान दूसरा कोई नहीं है, इसलिए वह अतुलनीय व अद्वितीय होने के कारण निर्भय है।

निर्वैर ---- ईश्वर के समान कोई अन्य नहीं है, ईश्वर से अधिक कोई अन्य नहीं है।अतः शत्रुता का प्रश्न ही नहीं उठता। समस्त प्रकार से शक्तिशाली ईश्वर निर्भय एवं निर्वैर है। यजुर्वेद कहता है

न तस्य कार्य करणं च विद्यते,न तत्समश्चाभ्यधिकश्च दृश्यते।

परास्य शक्तिः विविधै व श्रूयते स्वाभाविकी ज्ञान बल क्रिया च।[22]

अकालमूर्त -----(मूरत) न कालो विद्यते यस्य स्वरूपस्य

अवयव ईश्वर काल रहित है, अन्य समस्त चराचर जगत सावयव है इसलिए काल से अन्त होने वाला है। ईश्वर अकाल है और काल का भी काल होने से महाकाल है

स विश्वकृद् विश्वविद् आत्मयोनिः,ज्ञः कालः कालो गुणी सर्वविद्यः

प्रधान क्षेत्रज्ञपतिः गुणेशः, संसार मोक्ष स्थिति बन्ध हेतुः[23]

---

17 भाष्य,1,1,2
18 यास्क, निरुक्त,उपो.2.3
19 ---------ऋग्वेद,10,90,2
20 वही,5,85,3
21 -------मी.वा.,1,3,18
22 यजुर्वेद,6,16
23 यजुर्वेद,6,16

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer-Peer Reviewed, Refereed & Open Access International Journal - As per UGC Norms
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:6(1), June 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

समस्त जगत ईश्वर की खाद्य वस्तु के समान है।[24]

अजूनि ---- (अयोनि) योनि कारण। सबका कारण ईश्वर है,उसका कोई कारण नहीं है।[25] ईश्वर का उत्पन्न करने वाला अर्थात कारण कोई नहीं है।[26]तालव्य' य' का उच्चारण कहीं 'ज'होने के कारण अजोनि अजूनि हुआ है।

सैभं।----- सयभं स्वयं भा

स्वयं भांति,भासते, प्रकाशते इति । ईश्वर स्वयं प्रकाशित है । अन्य समस्त चराचर पदार्थों को प्रकाशित होने के लिए बाह्य प्रकाश की आवश्यकता पड़ती है, किन्तु ईश्वर स्वयं प्रकाशित होता है।वह स्वयं प्रकाश स्वरूप है

''भारुपः सत्य संकल्पः आकाशात्मा सर्व कर्मा।''[27]वह ईश्वर स्वयं ज्योति है,उसी से सब प्रकाशित होता है। उपनिषदो में ईश्वर को ज्योतियों का ज्योति कहा है।[28] स्वयं ज्योति ही ऋग्वेद में उत्तम ज्योति है। ऋग्वेद में ईश्वर को उत्तम ज्योति कहा है।[29]

गुरु प्रसाद ------ गु अन्धकार , रु रुणद्धि, अन्धकार रुन्धति

उपदेशक ही गुरु है

''तद्विज्ञानार्थं स गुरुं एवाभिगच्छेत्,समित्पाणिःक्षोत्रिय ब्रह्मनिष्ठः।''[30] और भी कहा गया है

यस्य देवे पराभक्तिः, यथा देवे तथा गुरु

तस्य एते कथिताः ही अर्थाःप्रकाशन्ते महात्मनः।[31]

आचार्य भी गुरु ही है। आचार्यस्ते गतिं वक्ता।[32]

आचार्यवान् पुरुषो वेद[33]

प्रसाद का अर्थ प्रसन्नता है ,''प्रसादे सर्व दुःखानां हानिरस्योपजायते।''[34]

---

24 --यस्यब्रह्म च क्षत्रं च उभरे भवतःओदनं।
मृत्यु यस्योपसेचनं कः इत्था वेद यत्र सः
25 शास्त्र योनित्वात् वे। 1,1,3
26 न तस्य कश्चित् पतिरस्ति लोके, न चेशिता न एव च तस्य लिगं।
स कारणं करणाधिपाधिपो न चास्य कश्चिज्जनिता न चाधिपः। यजुर्वेद,6,9
27 छान्दोग्योपनिषद,3,14,2
28 -उद् वयं तमसस्परिज्योति पश्यन्तःउत्तरम्।
देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्। ऋग्वेद 1,50,1
29 -हिरण्यमय परे कोने विसर्जन ब्रह्म निष्कलम्
तत् शुभ्रं ज्योतिषां ज्योतिः,तद् यद् आत्मविदो विदुः। मुं.उ .2.2.9
30 मु.उ.1,2,12
31 -श्वे.उ.6,2,3
32 -छा.उ.4,14,1
33 वही,6,14,2
34 गीता,2

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer-Peer Reviewed, Refereed & Open Access International Journal - As per UGC Norms
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:6(1), June 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

प्रसाद का अर्थ कृपा भी है। प्रसन्न होने पर ही कृपा प्राप्त होती है। गुरु और प्रसाद दोनों के मिलने से गुरु प्रसाद बना है जिसका अर्थ है गुरु की कृपा, प्रसन्नता अथवा अनुग्रह।

ईश्वर एक है,सत् उसका नाम है,सबका कर्ता है,सब में पूर्ण है, निर्भय है, निर्वैर है,अकाल स्वरूप है, स्वयंभू है,स्व प्रकाशित है। गुरु की कृपा से उसकी प्राप्ति हो सकती है।